2日2

স॰খ্যাসার।

सार्था १.

Park a service de la constantina

है दाकी ७ विका विमानसङ हाजगटनर निकार

শক্ষজুত, হড়্রিপু প্রজৃতি আবক্ষানীয় সংখ্যার পর্যান্য

নংক্ষাং দু হিডার্থায়ন্ত ডিডং প্রদারং হয়। তথ্য মোষান্ পরিভালা অগন্ গুড্জ প্রভিচাত

> बीविभिनासाङ्ग सम सन्धः श्रेषेत्रः।

> > कनिकाउ।।

বুত বাবু গোবিদ্দদন্ত গুপ্তের ছারা সংবাদ সক্ষনরঞ্জন যন্ত্রে মুক্তিত হউল। দকাৰাঃ ১৭৮৩। মুক্তা।•ু চারি আনা মাজ।

विख्वां भने।

ব্যভাষা পাঠ করিতে যাইলে জনেকগুলিন সংখ্যার ক্ষানা অভ্যাবশ্যুক, অথচ একালপৰ্য্যন্ত কোন মহা-া কর্ত্তক এমত একখানি পুস্তক মুদ্রিত হয় নাই, যন্তা-র ওহাবং জাত হওয়। যাইতে পারে। জানি **এই অসম্ভাব** দ্বীক্ষণ প্রভাশায় প্রোংসাহিত হইয়া এই ক্ষুদ্র পুত্তক ্রি সম্বলন করিল। যা এতং পাটে এই প্রাচীন ভারত-রাধ্র পুর্মকাল-প্রচলিত আচার, ব্যবহার, ধর্ম, কর্ম প্রভূ-^L 5< কথাঞ্জত পবিচয়ও পাওয়া যাইতে **পা**রে। **ইহা যে স্ককু**-্বনতি বালকগণের পক্ষে কতদূর উপযোগী হইবে, ভিছিদ্য স্থাপনিত্তপ্ত রহিলাদ, তবে মধ্যে**২ ছুই এ**কটি ক্টানতর সংখ্যা পরিতাক্তমতে, ভাহারদিগকে এই পুস্তক খনি পাঠ কর্ম যাইতে পারে। যাহাইউক এমত সাহস ^{ুর} যাইতে পারে, যে ইংরাজী বিদ্যা**লয়ের উচ্চ শ্রেণীস্থ** প্রভাহান্তরাগী ছাফ মাত্রেই ইহার উপ**যোগিতা উত্তমরূপে** ময়ত্তৰ কৰিতে পাৰিবেন। **তন্মধ্যে যে সকল পৰ্য্যা**য় **লিখিত** ^{হইল ভন্তাবৎ প্ৰায় প্ৰত্যেক বাঙ্গালা পুস্তক পঠি প**লে অভি**} मात প্রয়োজনীয়।

ইহা কি সামান্ত জুংখের ও বিশ্বয়ের বিষয় যে ইংরাকী বিদ্যালয়ের কৃতবিদ্য ছাত্রগণের মধ্যে অনেকেই পঞ্চভূত কাহাকে বলে তাহা অবগত নহেন। তাঁহারা পঞ্চতকে পাঁচটি প্রেত বলিয়া জানেন।

অতএব পঞ্চতুত, ষড়রিপু এবং সপ্ত চিরজী বী প্রাকৃতি। আইজীয় পর্যায় ইহার মধ্যে সনিবেশিত গরা হইস অপর ছরুহ ও অনাবশুক বোধে অনেকগুলিন নংখা পর্বি ডাক্ত হুইরাতে। পুসকংখনি সহজ কর্বপেয়ে, প্রতি কটিন শক্ষেই অর্থ লিখিত এবং প্রায় প্রত্যেক সংখ্যার নিম্নতা গে এক একটু টাকা এবং কুচিং এক একটু মন্তব্য বিষয়র নিশ্বিত হইল।

সংখ্যাবে।ধক ও সংখ্যার পূর্ণবাধক এই দ্বিবিধ সংখ্যাব।সক সাধুভাষা শব্দ এবং কডকগুলিন সাক্ষেতিক শব্দ সকলেরই জানা আবেশ্যক বলিয়া পুরুকের শেষভাগে ভত্তাবং সনিবেশিত হউল। একণে ইহা সর্বত্র পরিগৃহীয় ও বাবস্তত হইলে মুমস্ত পরিশ্রম সকল বে।ধু করিব।

পরিশেষে সক্তজ্ঞচিত্তে বিজ্ঞাত করিতেছি যে সংস্কৃত্ব কালেজের মাতি শাস্ত্রাধ্যাপক শ্রীযুক্ত ভরত্যক্র শিরোমণি এবং উক্ত কালেজের সহকারী সম্পাদক শ্রীযুক্ত সোমনাথ মুখোপাধ্যায় অপিচ কলুটোলা ক্ষুলের হেড্পণ্ডিত শ্রীযুক্ত নমকাশু ভর্কপঞ্জানন, এই কয়েক মহাত্মা এই পুক্তকথানি সঞ্চলন পক্ষে বিশেষ সাহায্য করিয়াছেন। এমন কি ভাঁহার দিলের আন্তর্কলা ভিন্ন আমি কথনই মদারদ্ধ কার্যো সিদ্ধ কাম হউত্তে পারিতাম না।

्रहेड्ड १ ०४०८१ শ্ৰীবিপিনমোহন সেন গুপ্ত। প্ৰেসিডেদী ফালেক।

সংখ্যাসার !

यश्च वश् ।

দক্ষিণায়ন --- --- --- --- --- --- ---- জি উত্তরায়ণ --- --- --- --- --- ---- জি

यशन यश्री वर्गतार्का

2

সূর্য্য পূর্ব্যদিকে উদয় হইয়া ক্ষেণ দিক্ত দিয়া যে ছয়দাস অন্তগত হন তাহাকে দক্ষিণা নন এবং উত্তরনিক দিয়া যে ছয়মাস অন্তগত হন তাহাকে উত্তরায়ণ কহে।

शक बरा।

ক্তমপুক্ষ কুফপুক্ষ

পূর্ণিবার পর অমাবতা অবধি সময়কে কৃষ্ণ পক্ষ, এবং অমাবতা ছুইতে পূর্ণিনা পর্যায় সৃষ্ট- য়কে শুক্লপঞ্চ কৰে। অতএব প্ৰায় দিন রাজে তৈত্তীপক্ষ হয়।

ঋণ ত্য়।

লোকে বেদ পুরাণাদি গাঠগার। কবি ঋণ সম্ভাবনাৎপাদনে পিতৃ ঋণ, এলং সজ্জাদি সম্পা দনে দেব ঋণ হইতে মুক্ত হইয়া গাকেন।

जिलाक।

ভূর্নে ক	,	***	••	
छरार्ल क		•		
स्:लं व			•••	*
			••	
				٤
SET 47				का र
इ.ल <u>ं</u> क		মৰ্ভীং	লাক (দু	्वस ,

ভূব লোক	***	••••	ৰিডী য়	লোক
শ্লোক	,,,,	×	्ट्रलोक, क	মর পুর
4	4	ত্ৰজগৎ।		
वर्	.,,		* **	5
्र. इ.कु	.,	, - +1	* **	77
ं इंग			, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	\$
				مدهد فای نیزورد و بصدری
				13
	f	नक बर् ।	,	
'বুং লিফ	•		. **	. >
ন্ত্ৰীলিঞ্চ		-•		*
<u> টীবলিক</u>	••	,,,,		ŕ
				and and an area of the second
		41		15
	÷	তিগুণ।		
मर्भ			*	٠ ۶
ব জঃ		***	,**	··· 5
ভমঃ			. * * *	*****
				ંડ

* TP				. खर्थ		
AT CA	কৃতির প্রথ	મ જીવે શ	দ্বার: স্বি	हे ह्यू ।		
	ট ছিভীয়	ल्ला के	रुचि । क	२য় ।		
্তসঃ	ৈ ভূতীয়	ह कव जे	क्षिं गा	গ হয়।		
ভিতাপ ৷						
স্থাধি বৈবিক		***	••			
আধি ভৌতিক	••	****	****			
जा धाशिक		4001	***	>		
				ও		
A de				অধ্		
जा दिदेशिक	বজাগত	, डेल्का	পাত প্ৰভূ	তি নে		
	जाश है बर	যাধীন গ	ভিয়া থাবে	FI		
আধিভৌতিব	যে ডুংখ হ	ागुया)	পশু, পক্	इंह-		
•	ভে হইয়া	থাকে	i			
আধ্যাত্মিক	नहीत रि	কয়া ম	নেতে কাৰ	গি ত্ত		
•	প্রভূতির	त देवरम	। ज्ना त	া কাম		
	ক্রোধার্ণি	नत जा	ধকুট নিমি	उ (ग		

मध्य श्व

ভাৰত্ৰয় ৷

•	*			
পশু	****	-141	****	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
दीर'	***	****	***	
निया	****	4* #1	••••	S
				-
				19

বেনোক্ত বিধানে শক্ত্যাদি পূজা যন্ধার।

তিহাকে পশু ভাগ কছে। নহা আড়ম্বর

ক্রোক্ত বিধানে ঐ পূজা যন্ধারা হয় ভাকে বীর ভাব বলা থায়। এবং নদ্য মাংগ

ক্ষেপ্প খারা বিনাড্যরে ঐ পূজা যন্ধারা হয় ভাশক্তে দিয়া ভাগ কহা যায়।

	অপর	ভাব	ৰয়।		
শ ্রিক	.***		***	••••	٠,
াজ্যিক	4887		4***	****	5
ভাষ্দিক	. 4 84		••••	****	>
	*				-

কেবল ধর্মার্থ জ্ঞানৈখর্য্য প্রকাশকে গান্ধিক ভাব কহা যায়। কান, কোধ, লোভ, লগত্যোৰ

म इंडिए	ক বাজস	'ভাব বল	া যায় ।	G di sono	MS-01,013-7
निजानगा	, কর্মা ট	વહાના નિ	দ্যুতাকে	ভামদ	जार जार
रहा। भाग		_			
* ,		ত্রিকাল	T	,	
9 .5	***	***	***	****	*
ভবিষ্যাৎ	***	**			
বর্ত্তমান		,	****	****	•
1.1				•	
भा यत				আ	رك
ছু ত	****	***	****	অৰ্ড	ভ
ভবিষাৎ	•		****	অনাগ	5
दर्खनाम	****	• •	٨	উপশ্বি	E
रिवय	করণের	<u> ५</u> इ क	'লত্য়কে	অনেক	21-
কারে বিভ			চলতঃ এ শ্ব	লে খা	মা
ুদিণের ভা ্					
* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	অপ	ার কাল	वश् ।		
गोला	4,64	***		-+	. 3

হোকন হাৰ্কক্য

- কেই প্রৌচাবছাকে কাল বিলৈষে পরিগ ণিত করিয়া থাকেন। मसुषा जीवन এই कारण हिन्छू शिखक पिरिश्त -খাণে তিন ভাগে বিভক্ত হইয়াছে। দশাত্র। 5 214 গভীর নিদ্রাবহাতে সৃষ্প্রিকছে। जिए। य। 4.13 48 1.75 ... वाशु। ··· শরীরের তিক্ত ধাতু।

CHTI

3. 8

এই দোৰত্য না থাকিলে শরীরে স্কুজ গ্রমনাগমন এবং শরীর রক্ষা করা ভার হইত। বায়ু,
জাঞ্জু এবং জল দ্বারাই যন্ত্র বিশেষ চালিত হইয়।
থাকে।

পদাথ ত্রয়।

চেডন স্টেডন উদ্ভিদ্ন

শব্দ চৈতন 'ই ৰ্ছ

চৈতন চেতনা বিশিষ্ট পদার্থ যথ। আশ্বাদি। জাচেতন চেতনা কৃছিত পদার্থ বলা পুতকাদি।

যাহা ভূমি ভেদে জমে যথা লভাদি।

শক্তিএয়।

প্রভূপী ক্রি

डे सिम

Power wife:

उदमार् गाउन

٠,٠

কর্মত্রয়।

(নভা		****	****	•
ীনমি ত্তিক	.***	****	••••	5
क्षा		****	****	*
				৩

যাঁহা না করিলে পাপ হয় তাহাকে নিতা কর্ম বলে। কোন কারণ বশতঃ যে কর্ম করিতে গম ভাহাকে নৈমিজিকু এবং কামনা করিয়া যে গর্ম্য করা হয় দেই কামা।

প্রমাণ চতু ইয়।

্ৰত্যক	****	24.41	***>	(
<u> বারুমানিক</u>		****		>
ইপনানিক	,***	****	••••	>
াদিক			****	>

. 8

যাহা ইন্দ্রিয় থারা অমুভব হয় তাহাকে প্রত্যক্ষ প্রমাণ কহে। ফল দর্শন করিয়া বাহার হেতু দির্দেশ করা যায়,তাহাকে আনুমানিক কহে, বিশ্বা পূম দুকে অনি নিরপণ করা) পরস্পার বৈষিষ্ট্রাকার থাকার একের দর্শনে অন্যকে নির্দেশ কুরাকে উপমানিক বলা যায়। আগুবাক্য অর্থাৎ দৈববাণী প্রভৃতি বিশ্বস্থ সাক্যকে শান্তিক প্রমাণ

वृद्धा

চতুৰ্বেদ্ 1

गाम

হিন্দু শাস্ত্রমতে বেদ অপৌক্রবের অর্থাৎ কোন পুরুষ কর্ত্বনহে। অনাদি ব্রহ্মা, অন্ধি, বায় কবি হইতে গরুর পালানের তুর্বের ন্যায় প্রকাশ মাত্র করেন। এবং মহর্ষি বাগে উহা শাখা প্রতেশে বিভাগ করিয়াছেন বলিয়া তাই।র নাম বেদব্যাস নামে থ্যাত হইয়াছে।

চতুরাশুম।

agaga adaa cabaa

<u>ক্রকর্ম।</u>

ানপ্ৰছ		2 4 2 4	****	,	*
To the state of th	****	****		****	* **
				,	8

বানপ্রস্থান্ত্রনার বনে বাদ করেন। বহু
চারাবি ভারতবর্গায়েরা উপরি উক্ত আশ্রম
্নুক্তর বৈভক্ত হইয়া এই ভারতভূনে বাদ করিে আদিতেছেন। তমধ্যে গৃহস্থান্ত্রনার মিরাই
কানে অধিক ও বানপ্রস্থান্ত্রমাবলদ্বিরা অভি
নি দ।

চতুৰ্বৰ্গ ৷

এই বর্গ চভুষ্টায়ের মধ্যে কোন না কোন্দ গই প্রায় নতুষ্য নাত্রেই পাইতে ইচ্ছা করিয়া

	চ	তুৰ্ণ ৷	
<u>রাক্ষণ</u>	***	***	****
ক তিয় বৈশ্ব	- 4 **	,	**
टेवर्च्य	***	••••	. • • •
गृज	****	***	

অভাদেশে পূকাকালে ত্রাহ্মণের। বাল ক্রিয়া দন্দাদনে, বেদাদি ধর্মশাস্ত্র পাঠে এ বাবস্থাদি দিভে। ক্ষতিয়ের। রাজ্যভার প্রহণে ও রাজ্য রক্ষার্থ। বৈজ্যের। ব্যবসায় করিছে এ স্ক্রেরা দাসস্কার্যা নির্কাহ করিছে আলিও কিতেন ও দেশাচারদ্বারা থাকিতে বাধ্য হইতে ন পরিমাণ চত্তীয়া

		•		
STICHAL	••••			••••
ভাল	1004		••••	****
গোক্ৰণ	**** (,	****	
বিভস্তি			****	••••

1

े श्रीराम 💎 कब्बंनी महिल विख् ज मञ्चे।

ट 'ल	-মধ্যমার	র সহিত বি	ন্ত অঙ	कें।	
্ৰংক্ষৰ্	অনায়ি	<u>কার</u>	्वे से		
নিশ্ব ডি	क निष्	ল্ল ঐ বাৰিণ	নত অথাৎ	্হ্ভাদ	र्के ।
	য	গ চভুষ্টয়	1		
7, 3 ;				•••	٦
. ภอโ	••••		****		3
হ পর	***	,,,,	****		3
eff	***	***	****		3
				٠	
					. 8
	চ কু	विंथ भाग	1.		
[स] ङ				.,.,	5
ান্ত	***	••••	• ••		>
र दन		, • •		****	3
- ক্রিক			•••		3
					-
					8

সূধ্য এক রাশিতে যাবৎ কাল থাকেন তা-ভাকে গৌরমান বলা যায়। চাক্রনান সূথ প্রকার মুগা চাক্র ও গৌৰ চাক্র। শুকু প্রতিপদাদি অমাবদ্য। পর্যান্ত মুগ্রিকা। কৃষ্ণ প্রতিপদাদি পৌর্ণমাদী পর্যান্ত বেই। হাত্রকার সাধারণতঃ তিশদিনে যে নান হয় ভাহাকে নাবন নাম কহে। অসিনীনক্ষত্র অর্থা রেবতানক্ষত্র পর্যান্ত যে কাল তাহাকে নাক্ষতির মাধা কহে।

পঞ্জুত ৷ কিভি অপ ভেজঃ মরুহ

ক্ষিতি-মৃত্তিকা। অগ-জল। তেজঃ-অফি সক্ত-বায়। ব্যোম্-আকাশ।

ভারতবর্ষীয় প্রাচীন পণ্ডিতদিগের মতে এই পঞ্চতুত করণক মন্ত্রা দেহ নির্নিত হইয়াছে।

ইউরোপীয় অধুনাতন পণ্ডিতেরা দ্বিধ্ি প্রকার জন আচে ইহা নির্দ্ধেশ করিয়াছের।

Œ

कर	र्यानु य	वारशान्त्र	য় পঞ্চ ৷	
110	200	****	,,,,,	>
દ શ	* ****	,	•	>
সূপ ্	4453	****	* r	3
*4	4**1	****	4.4	5
हे 'ऋ	Left - 1	** *	****	*
			disconn	Marie areas
				Ŋ,
পা	য়ু-ওহাদেশ।	এবং উপস্থ	-निष्म।	
		मुञ्ज शका		
5要:	***	b~ +4		*
ल प्			4 * * * *	3
ন'দিকা	B 50		4***	3
জিহ্বা	0 P #15	u #1+	****	*,
30	w/ \$ 4		****	•,

ইহাদের কার্য্য। ভাষা ক্রম এবং স্পর্ম।

অङ्गुलि शक्ष।

ক নিষ্ঠা	****	***1	* 1 * 7	
অনামিকা	****	•••	•••	
মধ্যমা		~***	ø	
ভক্তনী	. * * /	. ***	••••	
यहार है	****	****	****	

अञ्चल-इक्षेत्र्ल। उर्जनी-जन्महास्य वर वर्षेक्ष हेजानि।

Œ,

शक्षश्या।

গোময়	***	••••	***	•
গোমূত্র	****		***	
मर्थि	**4*	** *	••••	
ছুক			****	
মূড	****	****		4
•				•

লক্ষীনারায়ণ্ প্রভৃতি দেবভানিগের সং

जना ७ जनाना भूजा छेभलाक भक्षणतात ग्राव-रात रहेन्ना थारक।

প্র	াম্ভ।		
****	· E	***	3
748.5	***	****	`
44.00	****	••••	3
***		***	3
****	****	***	>
		4440 - 4440 4440 - 4440	

অক্ষেশীর বালাপ্রীদিশের বিতীয় বিবাহ কালুদিতে পঞ্চায়ত পানের প্রথা আছে।

	श्र	वधी।				
অশ্বৰ	****	• • •	***		5	
শিলু ৰট	****	•••			*	
	1943	****	1111	,	5	
ধাত্ৰী	****		* •••		>	(
वरनांक	·•••	****			>	

ধাতী অধাৎ আনলকী রুক্ষ।

প্রাণ্ড তলে মৃত্যু হইলে হিন্দুধর্ম মতে
মন্ত্রিটিশেষ পুণ্যাদ্মা বলিয়া প্রতিপন্ন হরেন :

शुक्षनवन ।

,,,,	. 196	
****		•••
	10	***
15.00	4.	****
	***	****
		••••

পঞ্চর।

স্থলচর	30 ×	,	
ज् स् हर्	***	64.44	****
উভচন		••	4***
मिवास्त्र	••	****	****
निन्दि ।	4	****	

এই পৃথিবীয় সমস্ত জীব ই পাঁচ প্রকার চন্ত্রজনীতে বিভক্ত হইমাছে। প্রকারতা বিশ্ব

। এত প্ৰনিয়দের জীবিকা নিকাহার্থ ধানা। প্র আবশ্যক বে ইহা মুত্রবলিয়া উক্ত হুখুমাছে।

अक्ष्मामा ।

গ ান্য	.***		*	•
जुला		****	***	5
ভিল	****	••	****	•
ঘৰ	4 15 3	***	2 * 4 *	3

ষ্ডেগর্ষণ

মুকা অংশিং মূর্ণ এবং মর্যপ্-সরিষা।
এই পাঁচ প্রকার ভিন্ন অন্য প্রকার শ্র
নাই এমত নছে। এডাবতা এই কয় প্রকার
শিল্যমধ্যে তেওঁ। শারদীয় মহাপ্রজার মৃতি
নির্মিত সেদীতে গ্রেশম্য বসন করিয়া গাকে

পঞ্চোপচার পূজা। গন্ধ পূজা খুল দীপ নৈবেদ্য

ে বেবতাদিবোর পূজা দামান্যতঃ প্রেপ-চারেই হুইয়া থাকে।

পঞ্চ উপাসক।

গাবপড়া

•		, সংখ্যাসার।		÷ .	>
r.3	,,,,		. ⊌ ≃ ∎	*** \$3	*
्यस्य		,***	4 > 5 4		5
A Z	***	***			>
art est		,•.•	**1		5
* 0					
			•		C '
2 70			फ र श्		
ণ,ণপত্য			ণ েণেশের ই	9श्रामर	ä į
เขาส	,	* **	স্থেগ্র		نگ
देव <u>"</u> ३४	. •	***	विकुत		ঐ
CA C		***1	শিবের		ঐ
3	1446	***	শাক্তর		ঐ
7.3.	•	পঞ্চবাণ	1		i.
অর্বি ন্দ					*
্ৰশেক		,***	*	,	>
চুত (আ	ম)	****	.***	••••	>
न्य दा लि	∽ •		***	,	>
নীলোৎ		***	søøt	•••	>

•				
ব্দ	যুক্চ	'উলেখি'	ত পূদ্ধ ক	त्यकि र
দেবের ব	ापवद इ	ইয়া সন্তু	ব্যের আহ	ঃকরণকে 🦠
্কারে।				
* *	35	গপর পর্	व्यान!	ŧ
मत्याश्न		***	** * 4	
উন্মানন			• •	****
শোৰণ			****	
্ভাপন		p.e.		** *
' গ্ৰ ন্থন		***		
<u>;</u> -			4.0	
•		<u> যড়্র</u>	म १	
স্থাই		****	••	1.50
व्यप्त	,	****	•••	
व्यवग	****	****	•**	
कर्रे		- * * *	•*	** ****
ভিক্ত	*-*>	••••	•	
ক্ষায়		-**	••	46 1007

সাদু-মিউ। কটু-তীত্ত-কাল। আহারীয় প্রত্যেক জন্যের আসাদ উপ্রি শিক্ত কোন না কোনটি রদের নহিত ঐক্য।

b ~.	य	ড্,ঋতু ৷		
्रीह	4444	,	****	>
2111 1122 1435 1435 143	c + 4 #	-06		5
41.2	4" "	A 4 0	***	«
.4.4 %	4613		r # ** ***	2
শ্যুক্ত	**** 1	•••	***	
143	4 ***	** *	5041	
!				***
				_

ঋতু ছারা বংগর বিভাগ।

ঋত।

	3 .	
¥	****	देनमाथ उ देक्छ।
दर्घ।		আলাড় ও আবণ।
শ্রহ	****	ভারও আধিন।
ংমন্ত	****	কার্ত্তিক ও অগ্রহায়ণ।
শীত	****	··· পৌষ ও না ষ ্
বসস্ত		ফ্ৰেণ ও চৈত্ৰ।

गाम।

(वमाञ्च मश्र)

कि यह। 	***	4 * 4 ,	***
्रक् रेश	., ,	•••	
े दरीकृत्व	• ***		
बिल् क	. •		
इंग ३	45.5	. /**	•
(का:िंखप	****	****	,

यङ्जिश्रा

ক ন	** *	****	* *
ক্রোধ	,	****	,
লে\ভ	ur s		***
মেশ্ছ	•		****
ज्ञ ज	***	••	مرا وهوه
মাৎসর্ঘা	•••	- *	*** **********************************

্মোহ-অজ্ঞান। মদ-মীত্ততা এবং মাৎদা প্রসিংহা, প্রঞ্জিকাতরতা।

ŵ

মনুষ্য মাত্রেই এইছয় প্রকার রিপুপট্রন্থ।
তল্পত্যে প্রভ্যেতেই কোনটির আধিকাত। ও
্রোনটির অংপভা বিলোকিত হইয়া থাকে।

এই ছয় প্রকার প্রধান দর্শন শাস্ত্র আমা— দের দৈশে অতি প্রাচীন দাল হইতে প্রচলিত আছে।

	ষ্ড্ বি	ध रेमना ।		
ামীল	****	****	****	*
ভ্ত্য	****	***	****	(,)
			<i>6</i> }	

'c	,	मल्मगूप् ।			
अवव		**** ,	4.70		
रेक	****	****	4***		
, সুরা	****	••••	****		

नः शामाद्र ।					ર્શ્ય
স্থি:	***	٠,	***		15 %
र्निथ	****		••	•••	4
5 8	3**1		•		5
क स	4.50		••	****	3
					 ,‡
3	_			£**	4
	ন হিন্দুরা				
	ংহাপিত হ				
্জ্য়া স্প	পাদন করি	র†ছিতে	नन गरन	<i>ष्ट्</i> नोर्ड,	যহেতু
নহাসাগ	রের প্রায়	নৰ্কাম্।	टनहें ग	मन त्रम	কর ত
বোধ হ্র	জলের 🤊	যাশ্বাদ	न (च्टा	ৰ ভাঁহার।	सूरि-
हों नर	ধেশগরতে	নাত	ভাগে	বিভক্ত	করিয়া
^{লিন} াছেন	[]				>
		সপ্তবি	11		·
पत्री हि	44.6	****	,**.	****	• •
যাত্রি	••	•••	- * *	****	>
শক্তিরা			,	.***	3
वृत्रखा	****	****	****		>
পুলহ		•••	***	**1	\$

₹ 6-		मर्थ)।मांद्र।		
'কবু	****	.***	****	***	•
र्वाम छ	. •	***	,,,,·		,
1				•	me,

मधिता की वी।

, व्यक्तांहः	•••	***	** 1
य जि	• •	****	
र्य) [म	•	.**	
্হত্ম 🖟	.,	• •	# Y # H
दिङ्गैनः:	** *		•
इशाहार्यः	. •		** 4
न्य छत्राम	****		

আনারের শাতে উলিপিত সাতজন আন বিলয়া উচ্চ ইট্যাছেন। রামায়ণ ও মহাভার পাঠে উপারি উচ্চ নহাত্মা সমুদ্যমের জীবনচরি। নাবিশো তথ্য হওয়া ধাইতে পারে।

मध्रशी।

- जोन			•		•
्रहिमश् (व	૧	S 44			>
-শ্ৰাচাৰ		***	****		3
এসপামা					3
গঙ়নি		,	•		3,
ু হৈয়াধন		• •			,
<i>দু</i> আন্ন				••	5
प्त ना (अ.स.) (अ.स.)	म गार (द्याः	শারিত	করেন। (১.২৮৮)		
77 F	••	***			3
2,212	****	****			2
''लाूजी	••			•••	>
ুশ				•••	*
Tarib es					

े, निकृत्यान कर होन मश्रापत हे कि यादर श्रीहीन ह्या हा हार करणी एउटा को हरदिकार समामाना तृष्टिको नाल हेन्नीत है के तर्य हो एउटा सार्विह करिया किलान, का होत स्थात स्थात मरम्ब नाव किला हिला हो एउटा निवित्र स्थात स्थात है किला किला के हैं किला कर हो है किला कर है किला कर सुरक्ष नित्र स्थात है से स्थाप है है स्थान का स्थान कर है किला है से अपार है है स्थान कर साम है है स्थान कर स्थान है स्थान कर साम है है स्थान कर स्थान है है स्थान स्थान है है स्थान स्थान स्थान है है स्थान स्थान है स्थान है स्थान है स्थान है स्थान स्थान स्थान स्थान है स्थान स्थान है स्थान स्थान स्थान है स्थान स्था स्थान स्थ

मध्डी।

প্রতিপ্রত। : কুলট' : : রঘলী :

प्रक्ती	****	• •		•
বেশ্যা	***	•••	****	5
गुन्नी		****		>
নহাবেশ্য।	****	**	•	•

প্রথমে।জ ভিন্ন অপর কণকটি শব্দ প্রায় অভেদে ব্যৱস্থা হস্টা থাকে।

9

পৃথিবীয় যাবভাগ ক্রা জা: ছই নিজহ চিল খ খুদার ও চা:ত্র চেনে এই সাত প্রকারে বিভক্ত হুইয়াছে।

मणिया।

कगातांडा		•	****	>
অন্নদ;ভা	••	••••		>
छ। नमाचा	•••	***	141	>
अङ्ग्रहा :				>
खग्राम (ज			***	>
रक्षणा छ।		****		'n

1

এতারতা তিপরি উক্ত সপ্তজনকৈ পিতৃবৎ ভক্তি করিবেক। ন্ন্নি সংগ্ৰহণ

বুধ বহুক্

4

শ্মি ...

্ কি হাঙ্গালা, হিন্দী বা ইংরাজী গ্রাহ সকল ভাষাতেই বার সকলের নাম, গ্রাহাদি হইছে উৎপত্তি হইয়াছে।

मव शब्

वासी १

	সংখ্যাসরৈ।				
ৰ ণা ত্ৰ		े ह के कंस १९	54.4-	135	
557		t the sa	. Taran	, 3 , '	
কোম		4.9.4 17	**	\$ 5	
इ:चु (इक्का)		***	/ I * *	3	
ซู ทั้	****	4 * * *	····	35	
ল					

74

রাজ্য বিশেষে উল্লিখিত, মপ্ত অন্তেরই আবশুক হইয়া থাকে। যে রাজ্যে অস বিশোদ যের অসন্তাব হয়, তাহা সম্বিক প্রাজিদশালী বলিয়া প্রিণ্ণিত হয় না।

অফ্ডাতু। হিরণাঁ (স্বর্ণ) রক্ত (রৌপ্য) কাংজ (কাঁ্যা) পীন্তল ভাম (ভাঁবা)

\$8	নং খ্যানার	1	
तीमा		• • •	***.
রাগ্ড	**** '	****	• ••
লৌহ (লোহা)	4145	4000	

হিন্দু দেবতাদি অন্তথ্যতু গঠিত চইয়া পাকে বোগোদয় বা বন্তবিদার পাঠে এই সকল ধাতুর গুণানিবিশেষ জানিতে পারা যায়,এইফানে এই পৃথিবীর নানা স্থানে নানা প্রকার ধাতু খনন হইতেছে। বস্ততঃ একের মহিত অপর ধাতুর ধোণেও অনেক ধাতু উৎপন্ন হয়।

বিবাহাষ্টক।

<u>রাক্</u>	****	****	**-#	4
टेस्द	1 # 4 #		****	"
चार्व	* 4 946	***	ande (
প্রানাপত্য	****	****	were as a second	*
ৃষ্যসূর	****	****	****	5
गायस	*			4,

পূর্বকালে এই ভারতবর্ষে উপরিউক্ত অফ গুৰার বিবাহ প্রচলিত ছিল, খাহ্বান পূথাক বি-খান্ব্যক্তিকে যে বিবাহে কন্যাদান করা হয় ভাত र एक खांचा विवाह करहा। यछ्डां नि यात्र स कतिया ुर्दाह्डिक स्य कमापान कहा इस जाहारक टेपव বিবাহ কহে। একটি গাভী অথবা গোমিখুন বঙ্কের নিকট লইয়া যে বিবাহে ভাঁহাকে কন্যা দান ক্রা শাল **তাহাকে আৰ্থ** বিবাহ বলাৰায়। **৫ তোমর** চ धरेष्ट्रा गार्रेष्ट्रा कर्म्य क्ब्नु,, बरेब्र्ट्स अवस्य याका েলিয়া অনন্তর অর্চনা পূর্বেক যে কন্যা দান ম্যু ৰ দান যে বিবাহের সম্পানক ভাহাকে প্রাঞ্ ग्डा विवाह वरता। कनाति शिजामिक यमे श्रामा ^{ক্}রিয়া য়ে বিবাহ সম্পন হয় ভাহাকে স্থা**ত্** বিবাছ কছে। কন্যা বরের **পর**ক্ষার অমুরাক্ষে শালিকনামি ব্যাপারানতর যেবিবাহ হয় তারাকে

রাক্ষ**ন** বৈশাচ

প্রথাক বিবাহ করে। হরণ সময়ে যদি পিতৃত্ব প্রতিকুল হয় ওবে তাহাদিগকে হননাদি করি কাঞ্ কন্যাব যে দান তাদুশ দান যে বিবাহের শিপাদক ভাহাকে রাক্ষন বিবাহ বলা ধ্য নিদ্রাতে অভিভূত বা মদ্যপানে মন্ত্র যে কন্য ভাহাকে হরণ পূর্বক অর্ণ্যে গমন কর্তঃ বিবাহ বিবাহ হয় ভাহাকে গৈশাচ বিবাহ ক্রে হারভীয় বিবাহ অপেক্ষা পৈশাচ বিবাহকে অন্

অফবসু ৷

ė				
य ज्ज	•••,	••••	****	
धून दनाम	****		***	
দোম	****			1
विक्	4***	****	*484	٠.
अविश	J.	****	****	
NAM	***	-424	ph ** 10/40 -	4.55
প্ৰ সাৰ	****	**************************************	*	

हें होता है महिंच विनार्धंत कामरमञ्जू व्यश्न-हत कृद की होत नीशक्तरम शक्रात गर्ख कर्में प्रदेश किता हो व्यस्ति मानवर्त्तक शतिकाश श्रृद्ध-के मिना ह्यारक शमन कैर्निम। क्यरपा विनि अश्वभूष होता है हिल्लम किनिहें क्रिज को मान्य में एक किन्म नत्त्वारक चीकि-ति मुक्त हर्मम।

(সহাভারতের আদি পর্জারগত, শান্ত্য র(সাধ মহিছ গজার বিবাহ অধ্যায় ৷)

	बन १	रिहा		,
इदि	***		***	*
দোম (চন্দ্ৰ)	***	••		>
नक ल	* ***	:***		>
दूष		****	* ***	. 5
র্ হ শ্পতি	••••	-		1
9 क	**** **	,,,,		**
	ৰ		,	- 44

****	•

অধুনতিন জ্যোতিঝিলা বিশারদ্দিণের
বিশ্বত হুর্যা গ্রাহ বলিয়া শিণার দ্বান না। উপরি
উক্ত নবগ্রহ ভিন্ন সিরিজ পালান, জুনো এবং
ভেক্তা প্রভৃতি জনেকানেক কৃত্র গ্রহ আধুনিক
ইউরোপীয় জ্যোতিঝিংশণ কর্তৃক আবিজ্ঞা
হুইয়াছে।

'švi'.	न्द	विज्ञ ।		
খনত রি	***		****	\$
ক্ষপূৰ্ব	,	# * 4 u	***	5
অনুরসিংহ	••••	4.40	***	
435	4900	***	••••	5
বেডাল ভট		**** ,		
শাস্ত্রপর	****	****	مقع	1.5
क्रालिमाम		6	****	· (** • • • • • • • • • • • • • • • • •

বরা**হ মিহি**র ...
বর**রুটি** ...

• এই মহাত্মার।, মহারাজ বিক্রমাদিতের। নৃভা, রত্ন মদৃশই বিমণ্ডিত করতঃ সংকৃত ভাষার বিশেষ উন্নতিসাধনীক্রিয়া গিয়াছেন।

र्यवक्ष।

আচার	•	****	****	****	a) 🖠
বিনয়		****	m * \$3	*	٠ ٢
বিদ্যা		****	1 ***	4***	•
श्रेडिकी (त	গৌরব)	***	í	****	
ভীর্থদর্শন		***	1414		7.40
निष्ठा (अध	[1			****	•
র ত্তি			***	****	•
তপঃ ্	~***	4944	40.0		111
मान .	****	••••	**** '	China.	. 3

80

যে সকল ব্রাক্ষণেরা এই নবগুণে গুণাছিত ছিলেন তাঁহারদিগকেই ভূপতি বল্লাল কুল শ্রেণীক্তে সংস্থাপিত করিয়াগিয়াছেন।

দশাবতার।

•				
भर,गा	***		****	
কুৰ্ম	0 F # B	**	****	
वंशर	L*E\$	₹.,	***	3
न् रतिः स	. * * *	<u>:</u>	***	:
र्वाभन	****			\$
योगमध्य (श	রগুরাম)	****	****	`*
রাম	4.00	****	****	. "
養排		****	,,,,	, , 5
বুজ		9808	* ###7	
केंग्य	.· ·	••••	****	>
ė			•	

ভগবান নারায়ণ উপরি উক্ত পর্যায়ক্তনে জ্বা ক্রহণ করিয়া এই ভারতবর্ষে যুগে২লীলা সম্পাদন ক্রিয়াগিয়াছেনঃ এইবুল পুরাণ্ডি হিন্দু শাস্ত্রে ্লিথিত আছে, তথাধ্যে কক্ষী, অবতারৰপে এই কণে আবিভাব হয়েন নাই। বিফুগণা নামক ব্ৰাহ্মণের স্থাহ এই ভাবী অবভার জন্ম থেছা। করিবেন।

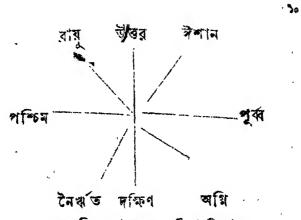
कन्की भूतांत निथि थाहि।

দশ সণ্কার।

	, ,			
VIEWN			****	3
शूश्मयन			****	·*`
শীমভো র্যুন			* ***	•
্জাত কৰ্ম		****	****	5
নিষ্কু মণ	****	3846	****	>
নামকরণ	,,,,	**#4	****	>
অন্নপ্রাশন	****	4***		\$
চূড়াকরণ	***	****	****	, 5 ,
উপনয়ন	••••		****	5
বিবাহ	4648	.ia.	***	*

मनामक । 有がら ं देन थ उ अप ४३ मणापिक शाल। পিতৃপতি (বন)

ব্ৰুণ		2	****	* j\$
र्यकृष	****	••••	***	\$
কুবের	****	****	****	• •
ঈশ	99.11	***	****	. 5
উৰ্দ্ধেত্ৰদা				, s. 2 - 5
অধুসি অনন্তঃ	****	4444	****	3



দশদিক পালের দশদিক বিভাগ। দিকপাল ----

	4 4				
हेस		****	41.94	****	

-				
बारू	4.001	4 ****	****	'শ্বি
পিতৃপতি ফি	্য		****	ए किन
নৈশ্ব ত	}***	****		देन्य छ।
বরুণ	****		****	পশ্চিম
ম্কুৰ	67.14	****	****	বাৰু ৷
কুবের	***	****	***	উত্তর।
Brat		****	****	क्रमानु ।
ত্রশা	,,,,,		***	041
थ नसः	****	•	****	, व्यक्षः।
, t	Trainsta	17 %-	¥ 2.	
e .	म्ट्या शह	ার পূ	12	
श्रीमः	দশোপচ 	নর পূ ্	1.4 	>
পাদ্য অ র্ঘ্য	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	ণার পূ	<u>ڊ ل</u> 	5
ক্ষর্য্য ক্ষাচমনীয়	* ***	****	بدلا 	
ক্ষর্য্য ক্ষাচমনীয়	* ***	****		
व्यर्गु	* ***	****		5
ক্ষর্য্য ক্ষাচননীয় মধুপর্ক (অভ	* ***	****		5
ক্ষর্য্য ক্ষাচননীয় মধুপর্ক (অভ	* ***	****		5

দীপ टेनटवर्षर

দশোপঢ়ার পজা সামান্তঃ না হইয়া বিদ (भूष क्वितासुद्रादिय हहेशा शोरक। वञ्च कः मान भाइतिकः हरेलि श्रीने नुष्टि। कण स्टल मटगा-প্রচার পূজা সামানা প্রায় প্রত্যহ হইয়া থাকে।
দ্বা শন্তান।

7	- J. J.			
ेंदुर म			****	>
ক্তেজ্	****	****	****	
দত্তক	g @ 4 \$	****		*
ক্লতিম	** **	****	****	*
গূহঢ়াৎপন্ন	****	***	W++#	>
অপবিদ্ধ	****	***	****	,
दानीन	****			15
मंद्रहाष्ट्र	***,	***	••••	***
ক্ৰীত	-+1	. 404		13
পৌনজ্ব	****	* ****	(alegia	,

শারশব

নিবাহিতাল্রীরগর্জে সামীকর্ত্ক উৎপাদিতকে ্বিওরদ বঙ্গে, খ্রাীতে বিশানক্রমে অন্যদার উৎশ্রা-দিতকে ক্ষেত্রত। নাতা ছিত্তা কর্ত্তক দত্ত যে পুত দে দত্তক। স্বজাতীয়, পুত্ৰীৰ্থাক্ৰান্ত কে ন বাল-ককে পুত্র করাকে কৃত্রির করে, বাহ্নপুর ভার্য্যাতে ! গোপনে স্বন্ধাতীয় জন বিশেষ কর্তৃক পুত্র উং পাদিত হর এমত পুত্র গুঢ়োৎপন। মাতা পিতা কুৰ্ত্ব পরিতাক্ত বালককে পুত্রৰূপে স্বীকার করা অপবিভা। বিবাহের পূর্বে কন্যার পিতৃ श्रह (य शूळ इस म कोनीन। गर्डयूक कनोोत ৰিবাহ পরে, ঐ গর্জ্জাত পুত্তকে সংহাত কহে। পিতা মাতার নিকটে অর্থধারা যাহাকে কেনা হয় দে ক্রীভ। বিবাহানন্তর পুনর্বার অন্যের ভার্যা। হুওড়: মে মন্তান জন্মে তাহাকে পৌনর্ভব। মাতা পতা কৰ্তৃত্ব অকারণে ত্যক্ত কি মাতা পিতা

, সংখ্যাসার। ৪৪ ু বিহীন বালক আপনি অনেরে পুত্র হয় যে স্বরং ৰত। আদিণ কামাশক হইয়া শুদাতে যে **পুত্ৰ**ী উৎপাদন করেন ভাহাকে পারশব্ করে।

দ্বাদশ মাস।

देश ग्र	****		****		٠,
ेखार्छ	***	•		****	*
ৰা ষাত	**			***	>
ভাবণ	****		****		3
ঠাত	.			*1**	5
আশিন	****			***	.>
কার্ত্তিক	***		, 4 01	****	' *
অগ্ৰহায়ণ			***	4 4 4 4 4	3
গৌৰ			***	****	3
মাহ	u4:*		****	<***	>
কান্ত্ ণ	**		****		*
टेम्ब		****	***	***	3

मापन तानि।

ে ঘৰ	***	2000	***	s
इब	****	****	****	>
নিথুন	***	****	•***	ν,
কক'ট	****		***	*>
मिश्ङ्	•••	****	****	>
कन्तरा	****	2	****	4
তুলা	****	474)	****	¥,
ব্লশ্চিক (বিছা)	• • • •	****	1166	4
ধন্ম	****	1 * * *	****	•
নকর	****	** * *	****	ړ.
কুন্ত দীন	••••	W1 98	2***	5
मीन	••••	4+34	····	,_

52

জ্যোতির্বিৎ হিন্দু পণ্ডিতদিরের মতে কুর্মা বংশরের মধ্যে মেষ, ব্লব প্রভৃতি এই বাদশ রাশিচক এক বার পরিভ্রমণ করেন। ভ্রমধ্যে বৈশাখে মেষে, জ্যৈতে রুষে, আবাচে

े थ न	এবং	এইবপে	टेहदव	भीन	র∷শিতে	च्यू ग-
113	ক ে রন	1				

	পাথ্যদশ	তিথি।		
প্তিপ্ৰ	****		****	>
হ ছায়া	1444			•
इन्डीला		••••	••••	•
• কৃথী		·		>
" अश्री	***	**	••••	>
क्षेत्र		••••	****	•
শগুমী	****	****		5
খ টনী	****	****		>
नगर्भी	** **	***		3
Sar Cal		****	****	· >
बकानभी	****			, ,
वानभी		••••	***	>
दरशामभी			< 4.4.4	>
ए कु र्फ भ ी	••••	***		. 3
পূৰ্বিমা বা অ	মে বৈদ্য।		, 2 40	**
				34

বিতীয় ভাগ চকেপাঠ, পাঠে প্রতিপদ দ্বি দীয়া প্রভৃতি ডিথি নমুহহর করেণ ও চক্তকলার ক্রম রুদ্ধির বিষয় বিশেব অবগত হওয়া যাই। তেপাবে

তে পুরের। যোড়শ ফাতা। खनवाजी গর্রগারণী গুৰুপত্ৰী इंकेटमव शङ्गी ककाशाबी ... পিতার পত্নী कंगा সহোদরা ভগিনী **পু**ত্রপত্নী बटा (भाषात्री).... **ৰাতা**মহী পিতানহী ক্ৰাত্বধ খাত্ৰদা (মাদী) --

গিতৃষ্বা (পিগী) ···	****	 >
नाङ्गानी (नामी)	1440	 5 .

540

\$>

উপরি উক্ত যোড়শ পুজনীয়াদিগতে মা-ভূবং মান্য এবং ভক্তি প্রদর্শন করা মন্ত্রা মাত্রেরই উচিত, এই উদ্দেশেই হঁহারা মাতৃ-পদ বাচ্যে কথিত হুইয়াছেন।

যোডশদান।

ভূমি	****	****	** •	3
অ †সন		41.45		*
ज् ल	• • •	••	•••	>
বক্ত	****	•••	****	3
मीश	*1*	****	w### *	3
শন্ন	****	***	****	3
তামুল	****	****	****	•
ছত্ৰ	••••	****	***	5
म क	•••	** *		>
म ान र	****	4991	***	13

্বশ্বসক পুর্বাচননীয়

Y	मा भागा गाँव ।			5 2
গ্ৰীন ভল		* ****	as no in	1
1.3	•••	****	***	: 3
গভিব		***1	• •	>
र्ग स			•	\$
গুজা	••	***	****	\$
ধূপ	***	-	***	3
युष्ट कीष		****		Š
टेस एवन १	•••		***	5
<i>थम</i> न	,			*

500

তুর্গোৎসন প্রভৃতি ব্রুল্বালেলের থো-ডুল উপচারে পুজা কার্য্য সংগল চইলা নাজে। ফলতঃ অনান্য কর্ম কান্ডোপলকে ব্যেড়ল উপ্র-চারে পুজা হইলেও অনুমাত্র হানি নাট। অনেক ভানে নিভা নিভাই উপারিউজ বিধানে পুজা সমাধা হইলা থাকে।

অফ্টাদশ পুরাণ।

ৰাখ

*

गर्यामात्।

44
*4
**
*
>
•
>
•
*
>
>
•
>
>
5

এই দকল পুরংন মধে; অনেক উপপুরার নিবিউ আছে। পুরানপাঠে স্টির বিরণ রাজ্য নিবেশ বংশদিবরণ মন্ত্রত সম্ভীপ ঘটনাবলী ।বং বিশেষ বংশোর বিশেষ চরিত্র জালা যাই।

मान्य (दाहक (निहान्त्र) भेगः।

সংখ্যানাসত শাল তাই প্রিনার-গংখ্যা বেশেকা
প্রং সংখ্যান পূর্ব থা কি বাবার্যালা ভাষা
রংখ্যা বেশেক শাক ছব প্রক রে ব্যবস্ত-সাধ্তান
বাম প্রচলিত এক প্রানার ও সামান্যতা ব্যবস্তার
অন্য প্রকারণ ভ্রমণে প্রক্ষাক্ত প্রকারত নিম্নে
নিথিত হইল, ধর্ণ—

मः था	दाठक।	215	ণ্ৰ চব	ह अंदर ?	
াঞ্চ	र्भम				
	এক	37	अथ्य	প্রথম	
	্ৰি	২্ শ্ল	27	ছিভীয় ,	
	<u>ত্</u> ৰি	ওয়	>,	ভূতীয়	
	ठ खूत्	धर्य		एक द	

海で対	:1वाहर	शूर	역경(5종 * `-
可不	= (E)!		
Q,	শ্বন্ধ,	क्षा कर्षा	न् र्षः म
•	लकः पुर्दे (४४) अक्ष	₩å ,5	য ্ট্
, q."	मर्ख	94 ,,	मलुब
100	শাস্ত	bi "	दिधेव
79	4	·· Fa	া ব্য
5*	R. M.	جو پائدمد	सन्द
33	ester the mi	\$\$\$\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	-1221 · ·
38	च्याप्रभा	32 T	effe.
w,	उरहा १४	\$01:	अरहातन
>8	हर्नु (इ.स.) इ.स.	384 +>	U 2 4 "
14	अंश नम्	3a % " "	अं ६७ १ व
33	বেগড়ক	38.26 m	ষেণ ড় শ
38	স্ গ্ৰহ	59 M 39	对 创作业
>=	बाउंगमन	SPE W	অউাদ ৺
	केमिति गाँउ	39 M "	উনবিংশ
3.0	বিংশ'ত	₹0# 73	বিংশ
3.5	একবিংশকি	र्जम "	একবিংশ
1,5			

र: १४३ [†] वांहक ।		পূরণবা চাক শভ	1
स्र	न्त्र ।		
23	स्पनिङ्गिष्ठ	२३ मा अया १ ।। तिश्रम	
२७	उद्यागित् गाँउ	२०० , कारोनिस	•

২৪ চতুনিংশভি ২৬৭ , চতুনিংশ ৩৫ পঞ্চাবংশতি ২৫শ , প্রাবিশ্ব

€ खाँ मि।

উন্ধিংশতি হঁচাতে স্বাধানী পূরণ বাচক শব্দ সকল ক্লাভভাগ সংগ্ৰাহা বৈধক শব্দে (ভগ) প্রভাগের বেংগেও নিজান বয়। বথা,— উন্ধিংশতিহন, বিংশতিভাগ এক্বিংশভিভাগ ভগাশভভাগ ইভাবি।

मा भावाहक।

要果			3/18
43	• •		धर्ष् तिश्ला इ
29		••	मल्डिः मजि
25	••	•	অণ্টারি-শ্ভি
278	••	••	উন্তি-শং
۷.	b #e4	****	ত্রিং শৎ

भः यो भाव ।

मः था। वाठक।

PR			ats (
45			এক বি•্শং
wt -	å.	***	ब्रो जिश्मर
A 2	· ,,		उथा छ । भर
.98	,	•••	চতুত্তিংশৎ
130°	, + 40		State Links
W.	4 H & 1		वर्षे जिल्लाद
49	1444		的特別的一個大
AC.	*1**		थाये दि । भर
•5	****	w -	छ . ३ द्वा दिश्मा
*•	•••		हर् [विश्वाद
87.	**	***	এবচ গ্রারিংশৎ
80	1,5 %3 pr		ष वा दिन्यातिः भर
80			ত্রয়ো বা কেতহ'রি শং
. 68	***		ठडु करा दिश्म्
€¢.			পঞ্চম্বারিংশৎ
	> 4 # %	•••	ষট্চ হা রিংশং
in	· ·	****	সম্ভচ্ছারিংশৎ

मश्याग्वाहक।

			बर्भ ।
b -	**	**	करो। या व्यवस्य दिश्यर 🤾
14	* * *		उ नशक्कां न्
a	••		अशाम ९
5			<u> এক প্রধান্ত</u>
**		: •	ष्टां वा विश्वशंबद
4	***	••	হয়ে! বা ত্রিপঞ্চাশৎ
t g	,	***	D. S. C. SIDILES
t¢	** *	,	श के शर्म मह
i.Su	•••		नकेश्री मह
i¶.	•••		न हा शक्षां मर
ib	* **		चक्षी वा असेमकामक्
61	,,,,,	**	उ न्हें हि
62	••••	***	य ि
6'4		****	ध क्ष ाँ हैं
20		•	षा रा विगन्धि
p 7			बरम्। दा किष्ठि
**	••••		চতু : यथि

मः था। गान् ।

मः शानाएक।

412/			নাগ।
O.C.	. 1 #1		शक्षास्त्र
100		• ••	ষট্ শ্ৰিট
309	*		নপৃষ্টি
% 7			था छै। या खातिन कि
4.3			উন্স ঞ্জি
4.	****	•••	সপ্ত(ভ
•	4.11		একগণ্ডবি
35	****	•••	দিমপ্রতি
92	,.	****	ন্ত্রনপ্ত ডি
90	****	****	
48		• •	চ দুজ্যত কি
912		• (्रहरश्रद्ध 🐷
» 1	**	***	महेमक्षि
49	,	***	अक्रम वि
8 5	***	•••	क्कि व ध्यंत्रेमखि
4.5			क्रियां की कि
73, 9°	- **	,	खरी(ड
	*	•• •	একাশীভি
37/2	· (****		

भःशाबाहक।

132			নান :
ર	*1 **	**	হ;শীতি
٠,	f A a	***	gradf s
-8	• •	**	চভু রশীতি
• 3	••	•	প্রগশীতি
-16		••	যড় শীতি
m-ą		***	মপ্তাশী ছে
سؤمو	•		अक्रम्भी ह
55	• •		ঊননবভি
సం	***	• •	नदिङ
25	****	••	<u> একনব্</u> ডি
३३	***	***	ষা বাগিন্ৰভি
એલ્ડ	**		ত্রয়ো বা ত্রিনবভি
: 3	***	4777	চভুনবিভি
23	•••	****	শ্রানব্তি
ಶಿಶ	***	••	য ়ব ি
29	****		সপ্তনব ্তি
>	984 (1) 800 cm (1)	****	অন্টা বা অন্টনবঙ্কি

मः याविष्ठ ।

व इ	•		হ স
22		ملوفات	जनभ्य कि
, ,00	;	 	. 7

সাঙ্কেতিক শব্দ ব্যৱহার ৷

স্থানবিশেষে কতক গুলিন শক্ত সংক্ষাত 🐠 হার্য্য হয়, যথা— かまる きなん সাক্ষেতিক শব্দ। 17. (3 c) আং इंक् **इ**९ ₹ 211 ₹· উত্তর উং কিনমভ কিং কে'ম্পানি Caite ··· সীব**লিঙ্গ 3** ... १३इ१३ ९ 9.49 💮 👵 👑 🧓 होनान FT:

সংখ্যাসার।

দাক্ষেতি	क मंदर।			প্রকৃত শব ।
जि १		****	,040	জিমা
ste	4014	goo.	****	ভারিখ
Ŗę.	****			भवद
FRE '	****	****		क्रिश त
ন ং	\$## A	***	••••	নম্বর
143	4 6 100	***	•	निद्यमन
প্	4100	•	****	পরগণা
भू रा १	j :		p 2 Art	शून क
श्रूर	, 4++	****	****	পুংলিক
लार	****			পারসী
खः	****	#1 4	,,,,	প্রশ
বং	****	*,***	••••	ৰকলম
वि *		¥	jeogra	বিম জিছ ম
विश	. ···	, = #>	****	বিয়ারিং
হাং			****	वाक्ता
ভাং	1.00 4444	****	****	ভাণারী
ম ং	(**)	9+#8	****	মবলগ
ate	30PE	9 0 0 1 	<u>t-</u>	মার ক্ত

গাক্তে ডি	क मक्।			প্ৰকৃত খব ৷
মেং	****	****	***	মেন্টব্ৰ
নোং	4	v41>	****	<u>শোকাম</u>
মোং •	****	***	****	মোভাবেক
जीर,	****		***	ন্ত্ৰীলিক
' मार		****	4+,+	শাকিন
म ং	44.0	£	म १३	মৃত বা সংবাদ
हिश	•••		****	इन्ही
हिः	****	A4 4 #	****	इिगा व

